महाराष्ट्रीय महाकाव्य

(1) सेतुबन्ध एवं उसके रचयिता प्रवरसेन के काल निर्णय पर प्रकाश डालें।

Ans– सेतुबन्ध महाकाव्य महाराष्ट्री प्राकृत का एक सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है। इसमें राम कथा को सेतुबन्ध नाम की एक प्राचीन घटना को 15 आश्वासों में व्यक्त 1291 गाथाओं में ग्रथित किया गया है। परवर्ती राम कथा सम्बन्धी साहित्य की रचनाओं के लिए तो प्रस्तुत महाकाव्य एक आदर्श काव्य के रूप में सम्मानित रहा है।

वर्ण्य विषय के वर्गीकरण की दृष्टि से सेतुबन्ध महाकाव्य के प्रमुख दो घटना में विभक्त किया गया है।

(1) सेतुबन्ध, एवं रावणवध।

अतः दोनों घटनाओं के आधार पर इसके दो नाम उपलब्ध होते हैं।

(1) सेतुबन्ध महाकाव्य एवं (2) रावणवध महाकाव्य किन्तु प्रस्तुत ग्रंथ का अधिकांश भाग सेतुबन्ध की क्रिया के वर्णन में संलग्न है। पूर्व दक्षिण भाग तट से उत्तर भाग तक के अधिकांश भाग में सेतुबन्ध महाकाव्य नाम ही सार्थक प्रतीत होता है। रावणवध का वर्णन तो अंतिम कुछ गाथाओं में ही वर्णित है। अतः लेखक ने स्वयं ही इसका उल्लेख क्वचित् कुचित किया है।

सेतुबन्ध के कवि कौन है या किसने लिखा कुछ लोगों ने कवि कालिदास को माना कुछ प्रवरसेन को। इसके स्पष्ट करने के लिए अनेक कवि ने अपने मत से विचार किया है।

OPPO A53 · ©ADITYA

लेखक- परिचय एवं काल निर्धारण :-

सेतुबन्ध महाकाव्य के लेखक-प्रवरसेन है। पर भारतीय इतिहास में प्रवरसेन नाम के चार राजाओं के उल्लेख मिलते है। जिनमे से दो कश्मीर में उत्पन्न हुए एवं दो वाकाटक वंश में, कश्मीर के राजाओं के सम्बंध में कल्हण की राजतरंगिनी में जो वर्णन मिलता है उसके अनुसार प्रवरसेन प्रथम का काल प्रथम सदी है एव प्रवरसेन द्वितीय का समय दूसरी सदी है।

सेतुबन्ध महाकाव्य के टीकाकार रामदास भूपति ने उक्त काश्मीरो से उत्पन्न द्वितीय प्रवरसेन को सेतुबन्ध का कर्ता माना है किन्तु राजतरंगी तरंगिनी मे स्वंय ही कई अन्त विरोध होने से उक्त कथन असंगत प्रतीत होता है तथा कालिदास के समय कालीन न होने से यह सिद्ध होता है कि उक्त दोनों प्रवरसेन से सेतुबन्ध का कोई सम्बन्ध नही है।

वाकाटक वंश में भी प्रवरसेन नामके दो राजा हुए। प्रथम ई० सन 275 - 335 में एवं द्वितीय ई० सन 420-450 में। वाकाटक वंश के प्रथम राजा विन्ध्यशक्ति ने अपने कार्यक्षेत्र से सम्राट की उपाधि धारण कर अपना प्रभुत्व स्थापित किया गया तथा आरंभ स्टेट के वाकाटक नाम का ~~स्थान~~ स्थान से बढ़ते-बढ़ते दक्षिण भारत तक अपना साम्राज्य स्थापित किया। इस वंश के सभी राजाओं ने इस प्रभुत्व को जारी रखा। वाकाटक वंश के पाँचवे सम्राट पृथ्वीसेन के समय मे राजकुमार रुद्रसेन ~~द्वितीय~~ द्वितीय से गुप्तवंशीय सम्राट चन्द्रगुप्त की पुत्री प्रभावती का विवाह हो चुका था रुद्रसेन (द्वितीय) पाँच वर्ष राज्य भोग करके

OPPO A53 · ©ADITYA
2021/06/23 19:05 Bhojpur, Bihar

के बाद मृत्यु को प्राप्त हो गया। जब कि उसका पुत्र प्रवरसेन (द्वितीय) बहुत छोटा था अतः इसके नाम पर प्रभावती को राज्य कार्य सम्भालना पड़ा। यही प्रवरसेन द्वितीय प्रस्तुत सेतुबन्ध महाकाव्य का लेखक है।

उपरोक्त उल्लेखों से यह स्पष्ट हो चुका है कि कालिदास एवं प्रवरसेन समकालीन थे। सम्राट चन्द्रगुप्त एक ओर जहाँ प्रवरसेन का नाना था वही कवि कालिदास को राज्याश्रय दाता भी।

अतः दोनों की घनिष्ठता भी स्पष्ट है। महाकवि कालिदास की रचनाओं ने प्रवरसेन को साहित्य रचना के क्षेत्र में प्रेरित किया और उसने काव्य रचना प्रारम्भ में कई बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का अनुभव हुआ जिसका कि उसने सेतुबन्ध में निर्देश किया है इसीसे यह स्पष्ट है कि उसने कालिदास से सहायता अवश्य ली होगी। किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि कालिदास ने सम्पूर्ण महाकाव्य लिख दिया होगा और प्रवरसेन के नाम से प्रसिद्ध कर दिया गया।

वाकाटक वंशी प्रवरसेन प्रथम एवं द्वितीय के सम्बन्ध में एक प्राचीन प्रशस्ति प्राप्त हुई है जिसके अनुसार प्रवरसेन प्रथम का समय ई० पू० चौथी सदी पाँचवी सदी है।

उक्त प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सेतुबन्ध महाकाव्य का प्रणेता वाकाटक वंशी राजा प्रवरसेन द्वितीय था जिसका समय 5 वीं सदी निर्धारित है।